

आतंकवाद को लेकर भारत और अमेरिका की चिंताएं समान

पाकिस्तान से रिश्ते भारत की कीमत पर नहीं: मार्को रुबियो

► ऑपरेशन सिंदूर के समय हुई बातचीत का ब्योरा साझा करने से किया इन्कार

नईदुनिया ब्यूरो, मुंबई:अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा है कि पाकिस्तान के साथ अमेरिका के संबंध भारत के साथ रिश्तों या भारत की आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई की कीमत पर नहीं हैं। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खतरे को लेकर भारत और अमेरिका की चिंताएं समान हैं।

मुंबई के ताज महल पैलेस होटल में दिए साक्षात्कार में रुबियो से पूछा गया कि पाकिस्तान के साथ अमेरिका के बढ़ते संबंधों के बीच वॉशिंगटन यह कैसे सुनिश्चित करेगा कि भारत की आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई कमजोर न पड़े। जवाब में उन्होंने कहा, ‘किसी भी तरह से पाकिस्तान के साथ हमारा रिश्ता, भारत के साथ हमारे रिश्तों की कीमत पर नहीं है।’ उन्होंने भारत और अमेरिका के बीच लंबे समय से चले आ रहे संबंधों का भी उल्लेख किया।



रुबियो से पहलगाम आतंकी हमले के बाद शुरू हुए ऑपरेशन सिंदूर के दौरान अमेरिका की भूमिका के बारे में भी सवाल किया गया। उनसे 10 मई 2025 को भारत और पाकिस्तान के नेतृत्व से हुई बातचीत के पीछे

की जानकारी साझा करने को कहा गया था। रुबियो ने बातचीत का विवरण देने से इनकार किया। उन्होंने कहा कि पर्दे के पीछे हुई बातचीत सार्वजनिक करने से भविष्य में दूसरे पक्ष अमेरिका से बात करने से हिचक सकते हैं।

उनके अनुसार, ऐसी बातचीत गोपनीय रखने से तनाव के समय संवाद की गुंजाइश बनी रहती है। रुबियो ने कहा कि जब दो देशों के बीच तनाव बढ़कर बड़े टकराव या युद्ध का खतरा पैदा करता है, तब अमेरिका तनाव

घटाने के लिए रचनात्मक भूमिका निभाने की कोशिश करता है। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हुई बातचीत के विशिष्ट विवरण नहीं बताए, लेकिन कहा कि अमेरिका का उद्देश्य ऐसे हालात में तनाव कम करने में मदद करना होता है।

साक्षात्कार मुंबई के ताज महल पैलेस होटल में हुआ, जो 2008 के मुंबई आतंकी हमलों के दौरान निशाना बनाए गए स्थानों में शामिल था। रुबियो की टिप्पणिंयां ऐसे समय आई जब उनसे भारत-अमेरिका संबंधों और पाकिस्तान के साथ वॉशिंगटन के रिश्तों के बीच संतुलन को लेकर सवाल किए गए। उन्होंने अपने जवाब में दोहराया कि पाकिस्तान के साथ संबंध भारत के साथ अमेरिकी रिश्तों के विरुद्ध नहीं हैं। साथ ही, उन्होंने कहा कि आतंकवाद के मुद्दे पर दोनों देशों की चिंताएं साझा हैं और तनाव बढ़ने पर अमेरिका उसे कम करने की कोशिश करता है। रुबियो ने पर्दे के पीछे की बातचीत का खुलासा नहीं किया।

नेतन्याहू ने प्रधानमंत्री मोदी को स्वतंत्रता दिवस पर मशाल जलाने का न्योता दिया



► दोनों नेताओं ने पश्चिम एशिया की स्थिति और क्षेत्र में शांति बहाली पर चर्चा की

तेल अवीव, एजेंसी: इजराइल में चुनाव से पांच दिन पहले प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर बातचीत की। नेतन्याहू ने मोदी को अगले वर्ष 12 मई को होने वाले इजराइल के स्वतंत्रता दिवस समारोह में मशाल जलाने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने सामाजिक माध्यम पर बातचीत की जानकारी देते हुए मोदी को अपना मित्र बताया।

नेतन्याहू के अनुसार, मोदी ने निमंत्रण के लिए उनका धन्यवाद किया। भारतीय प्रधानमंत्री ने बातचीत में दोनों देशों के लंबे समय से चले आ रहे संबंधों की सराहना की और कहा कि भारत तथा इजराइल आतंकवाद के खिलाफ मिलकर काम करते हैं।

मोदी ने सामाजिक माध्यम पर बताया कि दोनों नेताओं ने पश्चिम एशिया के हालिया हालात पर चर्चा की। उन्होंने क्षेत्र में शांति और स्थिरता बहाल करने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया। नेतन्याहू इससे पहले फ्लॉइडुबई के भारतीय विमानचालक कैप्टन स्मित मच्छर से भी फोन पर बात कर चुके हैं। उन्होंने मच्छर को भारत और इजराइल के लोगों का नायक बताते हुए इजराइल आने का निमंत्रण दिया था। उस बातचीत में नेतन्याहू ने कहा था कि वह मच्छर और मोदी को अगले स्वतंत्रता दिवस समारोह में मशाल जलाने के लिए आमंत्रित करना चाहते हैं। अब उन्होंने मोदी से सीधे बातचीत में इस निमंत्रण का उल्लेख किया।

बीती 30 सितंबर को दुबई से तेल अवीव जा रही फ्लॉइडुबई की उड़ान में ओमानी सह-विमानचालक हमाद अल-हमामी ने कैप्टन मच्छर पर कुल्हाड़ी से हमला किया था। हमले के दौरान विमान तेजी से नीचे आने लगा। यात्रियों और विमानकर्मियों ने हमलावर को काबू किया। इसके बाद दो अन्य विमानचालकों ने विमान की कमान संभाली और उसे सऊदी अरब के तबुक में सुरक्षित उतारा। विमान में 172 लोग सवार थे। उतरने के बाद मच्छर को उपचार के लिए ले जाया गया। इजराइल का स्वतंत्रता दिवस हिब्रू पंचांग के पांच इयार को मनाया जाता है, इसलिए ग्रेगोरियन पंचांग में इसकी तारीख हर वर्ष बदलती है। 2027 में समारोह 11 मई की शाम से शुरू होगा। यरुशलम के माउंट हर्जल पर होने वाले आयोजन में 12 मशालें जलाई जाती हैं। यह परंपरा इजराइल की 12 प्राचीन जनजातियों का प्रतीक मानी जाती है। मशाल जलाने का सम्मान देश के लिए विशेष योगदान देने वाले लोगों को दिया जाता है।

सरकारी विद्यालयों में बिना अनुमति बाहरी लोगों के प्रवेश पर रोक

प्रधानाचार्य की लिखित स्वीकृति अनिवार्य; नियम उल्लंघन पर कानून के तहत कार्रवाई

नईदुनिया ब्यूरो, अहमदाबाद: गुजरात सरकार ने सरकारी विद्यालयों में बाहरी लोगों के प्रवेश को लेकर नई मार्गदर्शिका जारी की है। इसके अनुसार, किसी भी बाहरी व्यक्ति को विद्यालय परिसर में जाने से पहले प्रधानाचार्य या संस्था प्रमुख से लिखित अनुमति लेनी होगी। नियमों का उल्लंघन होने पर संबंधित कानूनों के तहत कार्रवाई की जा सकती है।

परिपत्र के मुताबिक, प्रधानाचार्य की पूर्व लिखित अनुमति के बिना विद्यार्थियों, शिक्षकों या विद्यालय की गतिविधियों का चित्रांकन, चलचित्रांकन अथवा सीधा प्रसारण नहीं किया जा सकेगा। शिक्षा मंत्रालय के शैक्षणिक सत्र 2025-26 के उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, गुजरात में कुल 34,734 सरकारी विद्यालय हैं। शिक्षा मंत्री



प्रद्युम्न वाजा ने स्पष्ट किया कि परिपत्र में किसी को विद्यालय में प्रवेश से प्रतिबंधित नहीं किया गया है। बाहरी लोगों को केवल प्रधानाचार्य या विद्यालय प्रमुख की अनुमति लेनी होगी। उन्होंने कहा कि यह निर्देश बच्चों की निजता बनाए रखने और उनके चित्रों तथा चलचित्रों को बिना अनुमति दर्ज कर प्रसारित किए जाने की घटनाओं को रोकने के लिए जारी

किया गया है। इसका उद्देश्य विद्यालयों में बच्चों के लिए शांतिपूर्ण और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना भी है। मंत्री के अनुसार, किशोर न्याय अधिनियम, भारतीय न्याय संहिता और अन्य कानूनों के तहत कार्रवाई केवल कानून का उल्लंघन होने पर होगी। विद्यालय में प्रवेश करने मात्र पर जुर्माना लगाने का कोई प्रावधान नहीं है।

गढ़वी ने दिल्ली के सरकारी विद्यालयों का उदाहरण देते हुए कहा कि अरविंद केजरीवाल ने वहाँ की स्थिति सामने रखी थी। उन्होंने आरोप लगाया कि गुजरात सरकार नए नियमों के जरिये सरकारी विद्यालयों की वास्तविक स्थिति उजागर होने से रोकना चाहती है और इसके लिए पॉक्सो अधिनियम के तहत कार्रवाई की धमकी दी जा रही है।

► संयुक्त अरब अमीरात में अक्टूबर में ईंधन के दाम 12 प्रतिशत बढ़ें; दुबई में लीटर का भाव करीब 123 रुपये

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: संयुक्त अरब अमीरात में डीजल की कीमत दिल्ली से अधिक हो गई है। 22 अक्टूबर के भाव के अनुसार, दुबई में एक लीटर डीजल करीब 123 रुपये का है, जबकि दिल्ली में इसकी कीमत 95 रुपये बताई गई है। इस तरह दुबई में डीजल के लिए दिल्ली के मुकाबले करीब 28 रुपये अधिक चुकाने पड़ रहे हैं। संयुक्त अरब अमीरात ने अक्टूबर में डीजल की कीमत में करीब 12 प्रतिशत की बढ़ोतरी की। बोते आठ महीनों में वहां डीजल के दाम लगभग 90 प्रतिशत बढ़े हैं। इससे ईंधन की कीमत करीब दोगुनी हो गई है। ये आंकड़े दुबई के हैं।

भारत के कई शहरों में भी डीजल दुबई से सस्ता है। मुंबई में इसकी कीमत 98 रुपये, कोलकाता और चेन्नई में 100 रुपये तथा हैदराबाद में 105 रुपये

वाहन की टक्कर से चार श्रद्धालुओं की मौत

नईदुनिया ब्यूरो, काकीनाडा: आंध्र प्रदेश के काकीनाडा जिले में गुरुवार सुबह सड़क हादसे में चार श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि तीन लोग घायल हो गए। हादसा राष्ट्रीय राजमार्ग-16 पर कतिपुड़ी जंक्शन के पास रविकिम्पाडु केंद्र में सुबह करीब 5:40 बजे हुआ। पुलिस के अनुसार, श्रद्धालु भवानी देवी मंदिर जा रहे थे। रास्ते में उनकी बस रुकी, जिसके बाद कुछ यात्री सड़क किनारे चाय पीने के लिए उतरे। इसी दौरान विशाखापट्टनम से राजमहेंद्रवरम की ओर जा रही एक खेल उपयोगी गाड़ी ने उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर के बाद चार श्रद्धालुओं की मौत हो गई और तीन लोग घायल हो गए।



प्रति लीटर बताई गई है। संयुक्त अरब अमीरात में पेट्रोल और डीजल के दाम अंतरराष्ट्रीय बाजार की कीमतों से जुड़े हैं। वहां हर महीने वैश्विक बाजार का आधार पर ईंधन के नए दाम तय किए जाते हैं। युद्ध और होर्मुज जलडमरूमध्य से तेल की आपूर्ति को लेकर बनी अनिश्चितता ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों को प्रभावित किया है। इसका असर संयुक्त अरब अमीरात के ईंधन

मूल्यों पर भी पड़ा है। संयुक्त अरब अमीरात के तेल ठिकानों पर हुए हमलों से निर्यात और आपूर्ति पर दबाव बढ़ा है। 14 मार्च को फुजैराह के तेल निर्यात केंद्र पर हमले के बाद आग लगी और जहाजों में तेल भरने का काम कुछ समय के लिए रोकना पड़ा। 19 मार्च को मिसाइलों को हवा में रोकने के बाद मलबा गिरने से हबशन गैस संयंत्र और बाब तेल क्षेत्र बंद करने पड़े। चार मई को

फुजैराह के औद्योगिक क्षेत्र पर ड्रोन हमले के बाद आग लगी, जिसमें तीन भारतीय नागरिक घायल हुए। समाचार एजेंसी रॉयटर्स की पड़ताल के अनुसार, युद्ध के दौरान फुजैराह पर कम से कम 19 हमले हुए। तेल टैंकों और पाइपलाइन व्यवस्था को नुकसान पहुंचा। होर्मुज जलडमरूमध्य के बाहर स्थित फुजैराह संयुक्त अरब अमीरात का प्रमुख तेल निर्यात केंद्र है।

तिब्बत में 7 तीव्रता का भूकंप

► भूकंप का केंद्र ल्हासा से करीब 400 किलोमीटर दूर, धरती से 10 किलोमीटर नीचे था

तिब्बत, एजेंसी: तिब्बत में गुरुवार रात 7 तीव्रता का भूकंप आया। भारतीय समयानुसार रात 8 बजकर 3 मिनट पर आए झटके स्थानीय इलाके में साफ महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र तिब्बत की राजधानी ल्हासा से करीब 400 किलोमीटर दूर और धरती से 10 किलोमीटर की गहराई पर था। चीन के भूकंप नेटवर्क केंद्र के अनुसार, भूकंप के झटके स्थानीय क्षेत्र में स्पष्ट रूप से महसूस किए गए।

फिलहाल जान-माल के नुकसान की कोई जानकारी सामने नहीं आई है।

तिब्बत में भूकंप आने की एक प्रमुख वजह भारतीय और यूरेशियाई भू-पट्टिकाओं की हलचल है। धरती की सतह के नीचे मौजूद ये दोनों बड़ी पट्टिकाएं लगातार गतिशील रहती हैं। भारतीय पट्टिका धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ते हुए यूरेशियाई पट्टिका पर दबाव डालती है।

इस दबाव के कारण धरती के भीतर की चट्टानों में हलचल होती है। जब चट्टानें अचानक खिसकती हैं, तो धरती में कंपन पैदा होता है। इसी कंपन को भूकंप कहा जाता है। तिब्बत के नीचे मौजूद दरारों में

समय के साथ दबाव जमा होता रहता है। दबाव बढ़ने और चट्टानों के खिसकने से इस क्षेत्र में बार-बार भूकंप आते हैं। भूकंप का केंद्र वह स्थान होता है जहां से धरती के भीतर कंपन की शुरुआत होती है। उसकी गहराई और आसपास की भूगर्भीय स्थिति के आधार पर झटकों का असर अलग-अलग क्षेत्रों में महसूस हो सकता है।

इस भूकंप का केंद्र ल्हासा से लगभग 400 किलोमीटर दूर था और इसकी गहराई 10 किलोमीटर बताई गई है। भूकंप के बाद फिलहाल किसी के हताहत होने या संपत्ति को नुकसान पहुंचने की सूचना नहीं मिली है।

चालान फेंकने वाले पर तीन लाख रुपए का जुर्माना अदालत ने कानूनी खर्च भी जोड़ने का आदेश दिया

► गलत जगह गाड़ी खड़ी करने पर 60 पाउंड का चालान हुआ था

कॉर्नवाल, एजेंसी: ब्रिटेन के कॉर्नवाल में गलत जगह गाड़ी खड़ी करने पर चालान कटे जाने के बाद एक व्यक्ति ने महिला अधिकारी से बहस की और चालान फाड़कर उनकी ओर फेंक दिया। उसे शुरुआत में 60 पाउंड, यानी करीब 7,600 रुपये का भुगतान करना था। मामला अदालत पहुंचने पर जुर्माना और कानूनी खर्च मिलाकर कुल राशि लगभग तीन लाख रुपये हो गई।

ब्रिटिश समाचार वेबसाइट ‘मेट्रो’ के अनुसार, आरोपी का नाम स्टीफन लैंग है। महिला अधिकारी ने उसकी कार की सामने की खिड़की पर चालान लगाया था।

लैंग ने चालान हटाकर फेंक दिया और वहां से चला गया। कुछ देर बाद अधिकारी जब चालान उठाकर दोबारा कार पर लगाने लगीं, तो लैंग वापस आया। उसने चालान हटाया, उसे मसलकर महिला अधिकारी की ओर फेंक दिया। घटना 20 नवंबर 2025 की बताई गई है। पार्किंग क्षेत्र में लगे निगरानी कैमरों में यह घटना दर्ज

हुई। कॉर्नवाल परिषद के मुताबिक, लैंग को कचरा फैलाने के मामले में दोषी पाया गया था और उसे 250 पाउंड का दंड नोटिस दिया गया था। भुगतान न करने पर उसे याद दिलाने वाले पत्र भेजे गए और कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी गई। इसके बावजूद उसने राशि नहीं चुकाई।

मामले की सुनवाई मजिस्ट्रेट अदालत में हुई, लेकिन लैंग पेश नहीं हुआ। उसकी अनुपस्थिति में अदालत ने उसे दोषी ठहराया। अदालत ने 250 पाउंड का जुर्माना, 1,920.90 पाउंड कानूनी खर्च और

100 पाउंड पीड़ित अधिभार देने का आदेश दिया। कुल राशि 2,270.90 पाउंड, यानी लगभग तीन लाख रुपये हुई।

ब्रिटेन में सार्वजनिक स्थान पर कचरा फैलाने पर सामान्यतः 12,650 रुपये का दंड नोटिस दिया जाता है। गलत जगह वाहन खड़ा करने पर स्थानीय प्रशासन के अनुसार करीब 7,600 से 63,000 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। वाहन से कचरा बाहर फेंकने पर भी 63,000 रुपये तक दंड लगाया जा सकता है। नोटिस का भुगतान न करने या मामला अदालत में जाने पर जुर्माना बढ़ सकता है।

विज्ञान

जापान के कागुया यान के रडार आंकड़ों से मारियस हिल्स इलाके में बड़ी खाली जगह होने की संभावना...

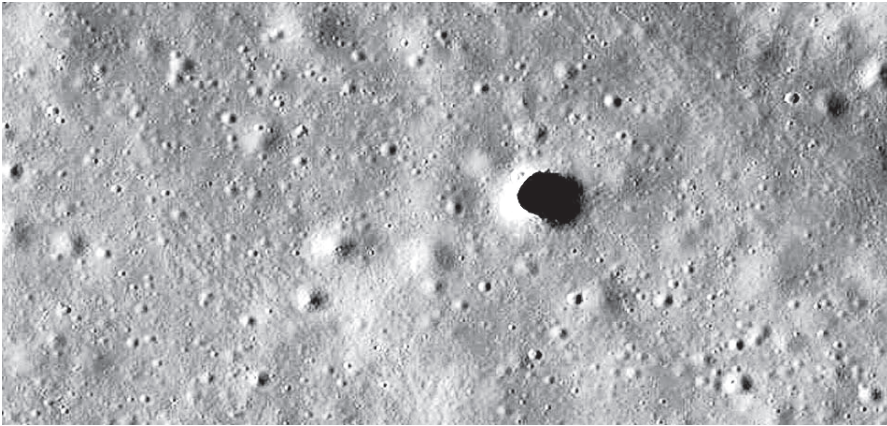
चांद की सतह के नीचे 50 किलोमीटर लंबी सुरंग के संकेत

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली: चंद्रमा की सतह के नीचे करीब 50 किलोमीटर लंबी प्राकृतिक सुरंग होने के संकेत मिले हैं। वैज्ञानिकों ने यह संभावना जापान के कागुया यान से मिले रडार आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर जताई है। यह संभावित सुरंग चंद्रमा के मारियस हिल्स इलाके में स्थित एक गड्ढे के नीचे हो सकती है। यह क्षेत्र पृथ्वी से दिखाई देने वाले चंद्रमा के हिस्से में आता है।

वर्ष 2009 में कागुया यान ने चंद्रमा की तस्वीरें ली थीं। इनमें मारियस हिल्स इलाके में एक गड्ढा दिखाई दिया, जिसे मारियस हिल्स होल नाम दिया गया। यह गड्ढा

करीब 50 मीटर चौड़ा और 50 मीटर गहरा बताया गया है। वैज्ञानिकों ने आशंका जताई कि यह गड्ढा जमीन के नीचे बनी किसी बड़ी सुरंग का खुला हिस्सा हो सकता है। इस संभावना की जांच के लिए शोधकर्ताओं ने कागुया यान में लगे चंद्र रडार उपकरण से मिले आंकड़ों का अध्ययन किया। यह उपकरण चंद्रमा की सतह की ओर रडार संकेत भेजता था। संकेत लौटने पर वैज्ञानिकों को सतह के नीचे की बनावट का अनुमान लगाने में मदद मिलती थी।

वर्ष 2017 में प्रकाशित एक शोध में रडार आंकड़ों से मिले ऐसे संकेतों का उल्लेख किया गया, जो



जमीन के नीचे बड़ी खाली जगह होने की संभावना दिखाते हैं। इन्हीं संकेतों के आधार पर वैज्ञानिकों ने

करीब 50 किलोमीटर लंबी लावा सुरंग की संभावना जताई है। ऐसी सुरंगें ज्वालामुखीय गतिविधि के

दौरान बहते लावे से बन सकती हैं। हालांकि, रडार आंकड़ों से सुरंग के हर हिस्से को देखना संभव नहीं

हुआ है। इसलिए उसकी पूरी लंबाई, आकार और बनावट की पुष्टि अभी बाकी है। इसके लिए आगे और जांच की जरूरत होगी।

यदि इस तरह की सुरंग की मौजूदगी की पुष्टि होती है, तो यह चंद्रमा की भूगर्भीय बनावट को समझने में मदद कर सकती है। सतह के नीचे मौजूद ऐसी जगहें भविष्य में चंद्रमा पर काम करने के लिए लोगों के लिए प्राकृतिक आश्रय की संभावना भी पेश कर सकती हैं। फिलहाल, उपलब्ध जानकारी इसे एक संभावित भूमिगत संरचना बताती है, जिसकी पुष्टि के लिए अतिरिक्त अध्ययन आवश्यक है।

